जुलाई-दिसम्बर, 2019
जनवरी-जून, 2020

ISSN : 2321-6131

अंक : 14-15

वर्ष : 7-8

समवेत

साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध
समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका
(Peer-Reviewed Half Yearly Research Journal)

विशेषांक :
21वीं सदी का
हिंदी उपन्यास
खंड-2

संपादक
डॉ. नवीन नंदवाना

अतिथि संपादक
डॉ. नीतू परिहार

Scanned with CamScanner

12. 'कैसी आगी लगाई' : विविधताओं से भरे जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति 111
देवेन्द्र कुमार गुप्ता

13. समता की अवधारणा और 'मोहनदास' 121
ममता नारायण बलाई

14. गाँव और किसान के दुःख-दर्द की दास्ता : 'अकाल में उत्सव' 129
प्रेम शंकर मीणा

15. 'एक ब्रेक के बाद' : समकालीन भौतिकता के बीच लरजती परीकथा 135
डॉ. महेश चंद्र तिवारी

Scanned with CamScanner

'एक ब्रेक के बाद' : समकालीन भौतिकता के बीच लरजती परीकथा

डॉ. महेश चंद्र तिवारी*

'एक ब्रेक के बाद' एक ऐसा उपन्यास है, जो न केवल आधुनिक भाव-बोध को स्पष्ट करता है वरन् आधुनिकता के विकास के साथ-साथ समाज में व्याप्त सामूहिक प्रतिमानों की भी बानगी प्रस्तुत करता है। उपन्यास का एक पूरा पठन जहाँ उत्सुकता व 'अरे.....!' का भाव बनाए रखकर पाठक को जोड़े रखता है, वहीं आलोचक के रूप में इसका पठन नए रंग उकेरता है। यह उपन्यास अपने समय का एक विश्वस्त एवं निरपेक्ष लेखा तो प्रस्तुत करता ही है, इस युग में जी रहे व्यक्ति की अपनी सोच, निजी संबंधों पर लगती आधुनिकता की चोट, मन में छिपे पुरातन विश्वासों, एकाकीपन, अजनबीयत, सुकून की तलाश, अनवरत प्रेम की चाह आदि काफी कुछ समेटे हुए है। काफी कुछ समेटने की चाह में वाकई काफी कुछ बड़ी सफाई से समेटा गया है, थोड़ा कुछ जो नहीं समेटा जा सका वह भी समेटा जाता तो कृति नायाब बन सकती थी।

जैसा कि प्रत्येक उपन्यास का मूल आधार होता है- कथानक। 'एक ब्रेक के बाद' का कथानक भी अपने शीर्षक की तरह थोड़ा-सा चकित करता है। लेखिका ने इस उपन्यास को तीन प्रमुख भागों में विभक्त किया है। पहला भाग अनामांकित है, जबकि दूसरा भाग है 'तुम जो चाहो..के.वी:' तथा तीसरा भाग है 'गुरुचरण

* सहायक आचार्य, हिन्दी, एस.सी. बोस राजकीय महाविद्यालय, कपासन, जिला-चित्तौड़गढ़ (राज)

Scanned with CamScanner